संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अतुलनीय नाम से आपको अभिवादन करती हूँ।

भजन संहिता 92:12–13 ''धर्मी लोग खजूर के समान फूले फलेंगे, और लबानोन के देवदार के समान बढ़ते रहेंगे। वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर, हमारे परमेश्वर के आँगनों में फूले फलेंगे।''

परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि हमारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर हैं। वचन यह भी कहता है, 'यदि कोई इस मंदिर को नष्ट कर दे, तो मैं उन्हें नष्ट कर दूंगा।' ऐसा इसलिए है, क्योंकि हमारा जीवन खरीदा नहीं गया है, न ही हमें आसानी से छुड़ाया गया है। यीशु को कुचला गया, पीटा गया, और उन्होंने हमारे लिए अपना जीवन बहाया और हमें छुड़ाया। इसी बलिदान के कारण ही आज हमारा जीवन सुंदर बना है। इसलिए, हम एक लापरवाह जीवन नहीं जी सकते, जिस तरह से हम चाहते हैं उसे जी रहे हैं, और अपने शरीर को अपवित्र कर रहे हैं; क्योंकि परमेश्वर का वचन कहता है कि केवल धर्मी ही यहोवा के उपस्थिति में फलेंगे–फूलेंगे। परमेश्वर हमें प्रत्येक दिन अपने जीवन में उनके अनुग्रह का अनुभव करने का अवसर देते है, और उनके नाम के द्वारा, मानवजाति अपने सभी पापों से मुक्ति प्राप्त करता है।

मत्ती 3:15 ''यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, "अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।" तब उसने उसकी बात मान ली।'' जब यीशु बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास गए, तो यूहन्ना झिझक रहा था। लेकिन यीशु ने उससे कहा, 'इस प्रकार हम सब धार्मिकता को पूरा करते हैं' जब यीशु इस पृथ्वी पर रहते थे, तो उन्होंने अपने पिता के एक–एक वचन को आज्ञाकारी रूप से पूरा किया। फिर भी, आज हम में से बहुत से लोगों को आज्ञाकारी होना इतना कठिन लगता है, और हम जीवन में चौड़े मार्ग को पसंद करते हैं, न कि उस संकीर्ण रास्ते से जो धार्मिकता और अनन्त जीवन की ओर ले जाता है।

मनुष्य, स्वभावतः परमेश्वर और उनके निर्णयों पर प्रश्न करता है। क्यों? क्योंकि मनुष्य के विचार परमेश्वर के विचार नहीं हैं। परमेश्वर के विचार हमारे विचारों से बहुत ऊंचे हैं, लेकिन इसे समझने और महसूस करने के लिए हमें आत्मारिक आंखों की जरूरत है। हम अपनी कहे–जाने महानता पर गर्व करते हैं, लेकिन हम भूल जाते हैं, कि यदि एक क्षण के लिए भी, हमारा परमेश्वर हमसे अपना मुँह फेर ले, तो हम इस पृथ्वी पर से नष्ट हो जाएँगे। भजन संहिता 104: 29 कहता है, ''तू मुख फेर लेता है, और वे घबरा जाते हैं; तू उनकी साँस ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैं, और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं।''

जकर्याह 2:10–11 ''हे सिय्योन, ऊँचे स्वर से गा और आनन्द कर, क्योंकि देख, मैं आकर तेरे बीच में निवास करूँगा, यहोवा की यही वाणी है। उस समय बहुत सी जातियाँ यहोवा से मिल जाएँगी, और मेरी प्रजा हो जाएँगी; और मैं तेरे बीच में वास करूँगा,''

प्रभु बार–बार हमें दोहराते रहते हैं, 'मैं इस दुनिया के अंत तक तुम्हारे साथ रहूंगा।' अगर प्रभु को हमारे साथ रहना है, तो हमें हमेशा धर्मी होने और उनका भय मानने की जरूरत है। एक पेड़ जो लंबा और सुंदर होता है उसकी जड़ें मजबूत और गहरी होनी चाहिए। इसी तरह, यदि हम परमेश्वर के साथ एक सुंदर जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें उनके साथ एक गहरा रिश्ता बनाना चाहिए और उसके साथ एकता में रहना चाहिए, तभी हमारा जीवन एक फलदायी होगा।

हम फिर से मिलें तब तक,

पास्टर सरोजा म।

1 थिस्सलुनीकियों 4:3 ''क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो :अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो,'' हमारे प्रभु जानते हैं कि हम एक पापी दुनिया में रहते हैं, फिर भी वह चाहते हैं कि हम अपना जीवन पवित्रता से जिएं। पवित्रता और धार्मिकता में जीने के लिए हमें अपने भीतर रहने वाली बहुत सी बुरी आदतों को त्यागना पड़ता है – एक शराबी को अपनी शराब पीने की आदत छोड़नी पड़ती है, और एक तंबाकू उपयोगकर्ता को तंबाकू चबाना छोड़ना पड़ता है। हमारे प्रभु के लिए, हम सभी ने अपने दोषों को त्याग दिया है और जीवन में आगे बढ़े हैं। क्यों? क्योंकि 'परमेश्वर के वचन और उनके लहू' ने हमें शुद्ध किया है, हम अपने सभी दोषों को पीछे छोड़ सकते हैं। जब हमें यह विश्वास हो जाए कि 'परमेश्वर का वचन और लहू' हमें शुद्ध करता रहेगा, तो क्या हमें तंबाकू चबाना और पीना जारी रखना चाहिए? क्या तब उनका वचन और लहू हमें शुद्ध करेगा? नहीं! यद्यपि हम नियमित रूप से चर्च आते हैं और हर शनिवार और रविवार को परमेश्वर का वचन सुनते हैं, लेकिन अगर हम अपने दोषों को जारी रखते हैं तो यह हमें शुद्ध नहीं करेगा। याद रखें, परमेश्वर हमसे पापियों के समान प्रेम करते है, परन्तु वह हमारे पापों से घृणा करते है। एक समय था, हम सब पापी थे; हम सभी ने अलग–अलग तरीकों से पाप किया है। हम सब अँधेरे में थे, मौत के अँधेरे में जी रहे थे। लेकिन, परमेश्वर को हमारे उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के बाद, उनके लहू ने हमें धोया और शुद्ध किया है, और हम उनका वचन सुनते हैं और उसमें बढ़ते हैं। हमने इस दुनिया में अपने दोषों को पीछे छोड़ दिया है, और उद्धारकर्ता प्रभु के साथ उनके बच्चों के रूप में आगे बढ़ते हैं। यह केवल यीशु के लहू और उनके वचन में हमारा विश्वास

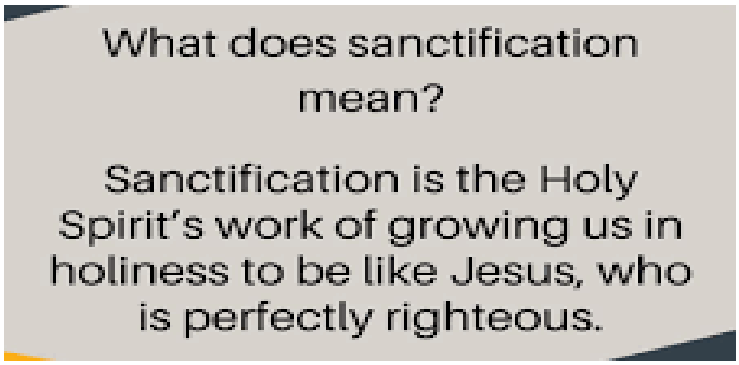

है जिसने हमें हमारे पापों से छुटकारा दिया है, हमें हमारी गंदगी और दुर्बलता से शुद्ध किया है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारे पाप कितने ही बड़े और गहरे हों, कोई भी डॉक्टर या रिश्तेदार हमारे पापों को ठीक नहीं कर सकता; केवल हमारा प्रभु परमेश्वर ही हमें चंगा कर सकते है और हमारे हर पाप से छुड़ा सकते है। उनका वचन और उनका लहू ही हमें शुद्ध कर सकता है। हमारा प्रभु पवित्र है और हम उनके बच्चे हैं, इसलिए हमें भी उनके सामने पवित्र होना चाहिए।

अक्सर, हम जो कुछ भी बोलते हैं उसके लिए हम जवाबदार होते हैं। नीतिवचन 21:23 ''जो अपने मुँह को वश में रखता है, वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है।'' हम सोचते हैं कि केवल शराब पीना, तंबाकू चबाना, व्यभिचार करना आदि घोर पाप हैं। परन्तु वचन हमें बताता है कि जो अपने मुंह और जीभ की रक्षा करता है, वह अपने प्राण को संकट से बचाता है। अपनी जुबान को जाँच करें और इसे हमेशा नियंत्रित रखें। जब इस्राएली बंधन से छुड़ाए जा रहे थे, और जंगल में यात्रा करते थे, तब उन्होंने दाखमधु न पी, और न तंबाकू चबाया, और न व्यभिचार किया। तौभी वे लगातार यहोवा परमेश्वर के विरुद्ध बड़बड़ाते रहे। इसलिए उनमें से कई जंगल में ही नष्ट हो गए। आज भी, हमें विश्वास करना चाहिए कि यह वह समय है जब हम जंगल में यात्रा कर रहे हैं, इससे पहले कि हम सिय्योन तक पहुँचें, वादा किए हुए देश में। हमें अपने मुंह पर नियंत्रण रखना चाहिए और जीभ को जांचना चाहिए, क्योंकि वे हमारी आत्माओं को नष्ट कर सकते हैं। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम केवल इसलिए पापी नहीं हैं क्योंकि हम धूम्रपान नहीं करते हैं या तंबाकू नहीं चबाते हैं, शराब नहीं पीते हैं, या व्यभिचार नहीं करते हैं। हो सकता है कि हमें लगे कि हम जो कुछ भी करते हैं उसमें हम धर्मी हैं, लेकिन 'वचन' कहता है कि हमें अपनी जीभ और मुंह पर नियंत्रण रखना चाहिए, तभी हमारी आत्माएं बच जाएंगी।

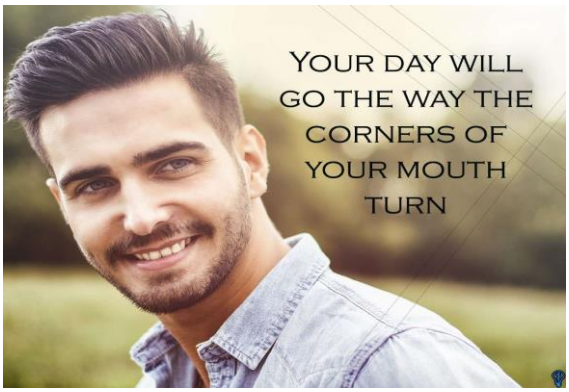

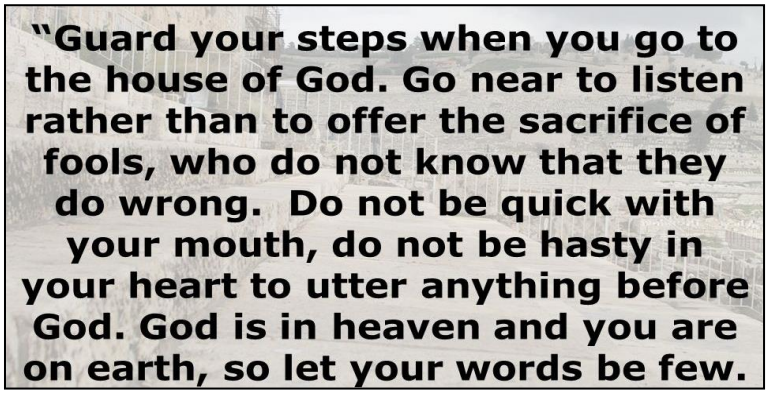

याद रखें कि परमेश्वर इस्राएलियों से कैसे प्रेम करते थे? वह दिन में बादल थे, जो उन्हें सूर्य की गर्मी से बचाते थे, और जंगल में उन्हें प्रकाश देने के लिए रात में आग का एक खंभा थे। परमेश्वर के प्रेम और अद्भुत कार्यों को देखने के बावजूद, इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाया और अपने मुंह और जीभ पर नियंत्रण नहीं रखा। फलस्वरूप, उन्हें उनके बड़बड़ाने के लिए कड़ी सजा दी गई थी। आज भी, हमें हमेशा उनकी छाया में रहने के लिए तरसना चाहिए, क्योंकि तब प्रभु हमारे

लिए दिन में बादल और रात में आग का खंभा होंगे। हमारे प्रभु की नजर हमेशा हम पर दिन–रात रहती है। वह हमारे हर अधर्म और गलत कामों को देख सकते है। उसी तरह, उसके कान उस ओर झुके रहते हैं, जो हमारे मुंह से उनके विरुद्ध निकलेगा। हमारे प्रभु परमेश्वर कहते है, नीतिवचन 21:23 में ''जो अपने मुँह को वश में रखता है, वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है।'' अधर्म की सीमा होती है, परन्तु धर्म की कोई सीमा नहीं होती। हम अपने जीवन में हमेशा शुद्ध और पवित्र बन सकते हैं। जबकि अधर्म की एक सीमा होती है, पवित्रता असीमित होती है। पवित्रता का जीवन जीना आसान नहीं है, और ऐसा करने के लिए हमें अपने जीवन को बहुत सावधानी से जीना होगा। शिमशोन की कहानी याद है? उसने एक वेश्या के साथ व्यभिचार किया, और उसके बाद जीवन में अपनी धार्मिकता खो दी।

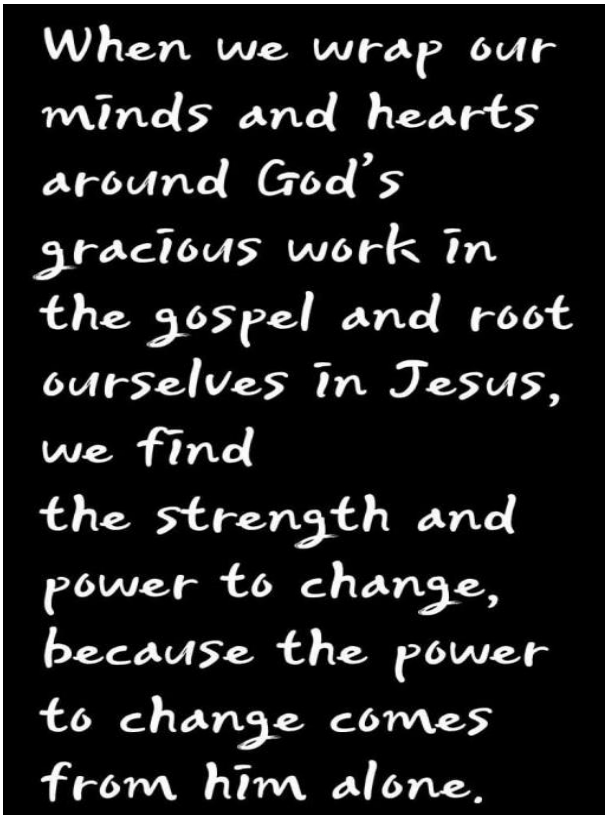

2 कुरिन्थियों 5:3–5 ''कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएँ। और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं, क्योंकि हम उतारना नहीं वरन् और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए। जिसने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिसने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।'' प्रेरित पौलुस कहता है कि हम प्रतिदिन परमेश्वर का वचन सुनकर धर्मी बन सकते हैं। वचन को हमारे हृदयों में लिखे जाने के लिए, हमें वचन को बार–बार पढ़ने और सुनने की जरूरत है, जब तक कि हमारा आंतरिक अस्तित्व पूरी तरह से बदल न जाए।

यदि हमारे श्वेत रक्त कणिकाओं या लाल रक्त कणिकाओं में कोई कमी है, या यदि हमारे रक्त में किसी चीज़ की कमी है, तो डॉक्टर हमें उपचार के दौरान उसे नियमित करने की सलाह देते हैं। कभी–कभी, डॉक्टर की सलाह के अनुसार, उपचार का यह कोर्स कुछ महीनों से लेकर एक साल तक या जीवन भर के लिए भी हो सकता है। इसी तरह, परमेश्वर के वचन को बार–बार सुनने से, हर शनिवार और रविवार को, वर्षों तक, वचन के द्वारा हमारे गहरे पापों को ठीक किया जा सकता है। यह कोई चमत्कार नहीं है कि जब हम यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं तो हमारे पाप गायब हो जाते हैं; जब हम उनके लहू से धोए जाते हैं तो हमारे पाप नष्ट हो जाते हैं। साथ ही, हमें लगता है कि जब हम पानी में बपतिस्मा लेते हैं तो हमारे सभी पाप दूर हो जाते हैं। नहीं! हमें रातों–रात शुद्ध नहीं किया जा सकता। वर्षों से बार–बार

परमेश्वर के वचन को सुनने से ही हमारा आंतरिक अस्तित्व बदलेगा। तभी हमारे जीवन में सच्चा परिवर्तन आता है।

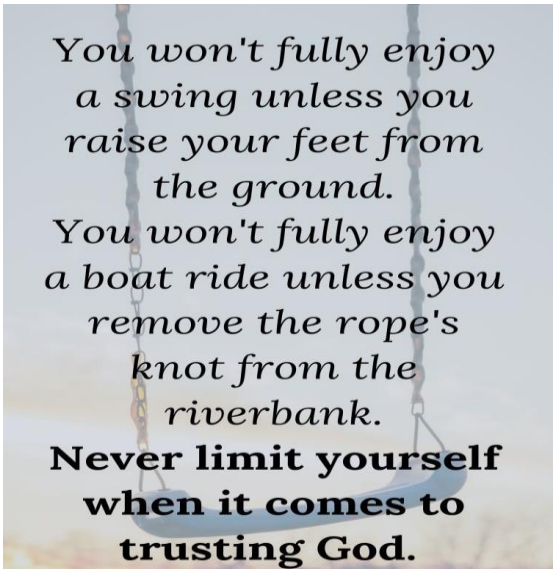

इब्रानियों 11:14 ''जो ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं कि स्वदेश की खोज में हैं।'' इफिसुस की कलीसिया में, कई 'भेड़ के वेश में भेड़िये' थे जो मंदिर में दाखिल हुए थे। प्रेरितों ने इन भेड़ियों को पहचान लिया। इफिसुस की मंडली में धैर्य की आत्मा थी, उनके पास बड़ी बुद्धि और समझ थी, और इसलिए उनमें एकता थी। 1 कुरिन्थियों 13:7 ''वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।'' यहोवा परमेश्वर ने इस मण्डली की सराहना की, क्योंकि उनमें सब कुछ सहने, सब बातों पर विश्वास करने, सब बातों पर आशा रखने और सब कुछ सहने का धीरज था। भले ही 'भेड़िये' भेड़ के कपड़ों में मंडली में प्रवेश करते थे, फिर भी उन्हें आसानी से ढूंढा जा सकता था, क्योंकि इफिसियों की मण्डली अलग थी और प्रभु के लिए बहुत खास थी। हमें भी अपने चर्च को कभी हल्के में नहीं लेना चाहिए। यह एक चुना हुआ पवित्र चर्च है। हम उसकी चुनी हुई मंडली हैं। हम सब परमेश्वर के सामने एक हैं, और परमेश्वर हम में से किसी के पक्ष में नहीं है, क्योंकि वह इस चर्च में हम सभी के साथ समान व्यवहार करते है। हमारे मन में कभी भी ऐसी कोई शंका नहीं होनी चाहिए। जिस प्रकार इफिसुस की कलीसिया सब कुछ सह सकती थी, उसी प्रकार इस पवित्र मंडली की कलीसिया के रूप में हमें भी सब कुछ सहना चाहिए। हमारे प्रभु परमेश्वर हम में से प्रत्येक के भीतर इफिसुस की कलीसिया में प्रचलित गुणों की खोज कर रहे हैं। जैसे परमेश्वर ने इफिसुस की कलीसिया से प्रेम किया, वैसे ही वह हमारी कलीसिया से भी प्रेम रखते है। इसलिए, जब हमें दोषी ठहराया जाता है, तो हमें इस पवित्र चर्च में परमेश्वर के वचन के माध्यम से सुधार और काउंसलिंग मिलता है। हमें सुधार को स्वीकार करना चाहिए और बेहतरी के लिए अपने जीवन को बदलना चाहिए। परमेश्वर के सामने हमारा कोई भी जीवन इतना शुद्ध नहीं है कि हम कभी भी पाप नहीं कर सकते, अधर्म के काम नहीं कर सकते, या किसी भी तरह से परमेश्वर को चोट नहीं पहुँचा सकते। कई बार हम पाप करते हैं, परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं और उनके विरुद्ध गलत करते हैं। जब परमेश्वर हमें हमारे पापों, अवज्ञा और गलत कामों को दिखाते है, तो हमें

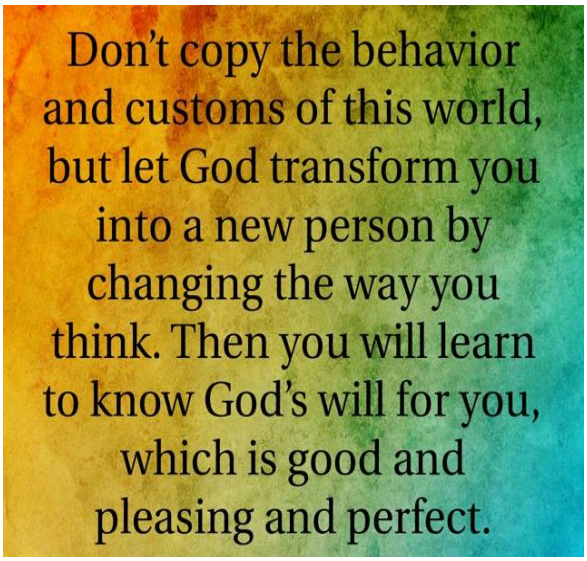

उनके सुधार को अनुग्रहपूर्वक स्वीकार करना चाहिए और बेहतरी के लिए अपने जीवन को बदलने का प्रयास करना चाहिए। जैसे प्रभु परमेश्वर ने क्रोध में इफिसुस की मंडली से कहा, 'मन फिरा और पहले के समान काम कर। यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उसके स्थान से हटा दूँगा।,' वैसे ही परमेश्वर हमें चेतावनी दे जब हम पाप करें। हमारा परमेश्वर कभी भी अपनी मंडली और प्रियजनों के खिलाफ आसानी से नहीं लड़ेंगे। वह हमसे प्यार से बात करते है, हमें परिणामों की चेतावनी देते है, और केवल अगर यह विफल हो जाता है, तो वह हमें दंडित करते है / न्याय करते है। परमेश्वर की चेतावनियों पर तुरंत ध्यान देना और उसके अनुसार पश्चाताप करना अनिवार्य है। पश्चाताप में हमारे घुटनों को हमारे प्रभु के सामने झुकना चाहिए, नहीं तो उनका क्रोध हम पर पड़ेगा। जब ऐसा होता है, तो हमें अपने पापों को दिखाने के लिए परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करना चाहिए। इससे पहले कि हम शैतान के हाथों में पड़ें, परमेश्वर हमें हमारे पाप दिखाते है। हमें इसके लिए प्रभु की स्तुति और धन्यवाद करना चाहिए। हमें परमेश्वर की चेतावनी और सुधार को तुरंत प्राप्त करने के लिए अपने आप को विशेषाधिकार प्राप्त और प्रिय समझना चाहिए। प्रभु हमें क्यों सुधारते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि हम उनके बेटे/बेटियां हैं। यदि परमेश्वर ने इफिसुस की कलीसिया से प्रेम नहीं किया होता, तो उन्हें सुधार और उसके बाद, उनको छुटकारा नहीं मिलता। हमें अपने जीवन में परमेश्वर के सुधार को प्राप्त करने के लिए हमेशा खुद को धन्य समझना चाहिए।

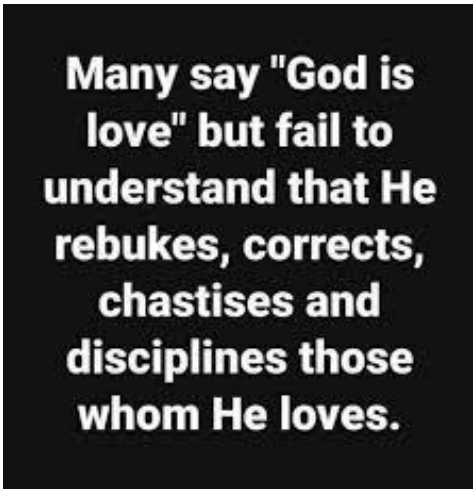

1 पतरस 2:19–20 ''क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुःख उठाता हुआ क्लेश सहता है तो यह सुहावना है। क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूँसे खाए और धीरज धरा, तो इस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुःख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।'' हमें अपने परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए, और यदि उसकी खातिर हमें सताया जाता है, तो यह हमारे लिए फायदेमंद है।

यह हमारे भले के लिए ही है कि परमेश्वर हमें सुधारते है, जैसे वह हमें बेहतर इंसान बनाना चाहते है। यह सुधार हमें उनके पुत्र/पुत्री बनाता है। इब्रानियों 12:7 ''तुम दुःख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?'' परमेश्वर हमें ताड़ना देते है क्योंकि वह मानते है कि हम उनकी संतान हैं।

अगर हमारे तीन बच्चे हैं, जिनमें से एक बहुत अच्छा बच्चा है, और झगड़ा नहीं करता है; जब भी अन्य दो शरारती बच्चों के बीच लड़ाई होती है, तो हम तीनों बच्चों को ठीक कर सकते हैं, जिसमें अच्छा व्यवहार करने वाला बच्चा भी शामिल है, क्योंकि उसने अन्य दो जो लड़ रहे थे, उन्हें सही नहीं किया। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम तीनों बच्चों को समान रूप से प्यार करते हैं। इसी तरह, परमेश्वर हम सभी को सुधारते है और हमें ताड़ना देते है क्योंकि वह हमसे प्रेम करते है। भविष्य में उनके राज्य में प्रवेश करने के योग्य बनने के लिए हमें विनम्रतापूर्वक कोई भी सुधार प्राप्त करने की आवश्यकता है जो परमेश्वर आज हमें देते है।

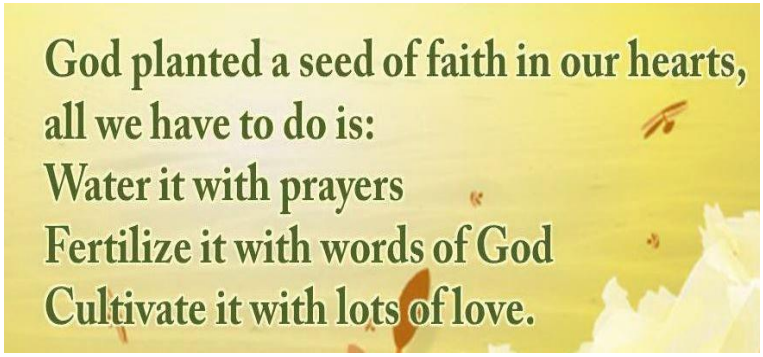

यहोशू 3:5 ''फिर यहोशू ने प्रजा के लोगों से कहा, "तुम अपने आप को पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा।'' यहोशू ने लोगों से कहा कि वे उसी दिन स्वयं को पवित्र करें ताकि अगले दिन परमेश्वर का चमत्कार हो। सामान्य मनुष्य के रूप में, हम पहले अपने जीवन में चमत्कारों की अपेक्षा करते हैं, जिसके बाद हम स्वयं को पवित्र करने के लिए तैयार होते हैं। लेकिन यह परमेश्वर का नियम नहीं है! परमेश्वर का नियम है कि हम अभी (आज) स्वयं को पवित्र करें, और उसके बाद (कल), हम परमेश्वर के चमत्कार को देखेंगे। चमत्कार किसे पसंद नहीं है? परमेश्वर की सन्तान, साथ ही वे जो उन पर विश्वास नहीं करते, अपने जीवन में चमत्कार देखना पसंद करते हैं। हम सभी अपने जीवन में परमेश्वर के चमत्कारों की कामना करते हैं। कई बार, हमारे पापों के कारण हम अपने जीवन में परमेश्वर के चमत्कारों का अनुभव नहीं कर पाते हैं। अक्सर, पवित्र शास्त्र में प्रभु कहते हैं कि यह हमारे पाप हैं जिन्होंने उनके और हमारे बीच एक परदा बना दिया है। इसलिए, परमेश्वर की महिमा को देखने के लिए हमें अपने सभी पापों से छुटकारा पाने की आवश्यकता है। यहोशू 3:5 ''फिर यहोशू ने प्रजा के लोगों से कहा, "तुम अपने आप को पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा।''

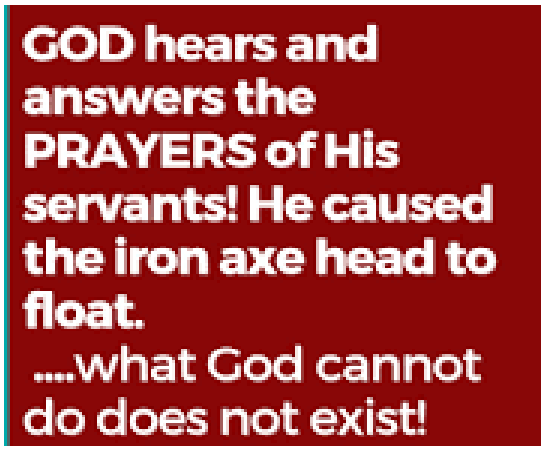

बहुत से ऐसे हैं जो केवल विश्वास की प्रार्थना के द्वारा अपनी बीमारियों से चंगे होते हैं, इसलिए नहीं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, या कि वे धर्मी हैं; लेकिन क्योंकि विश्वसनीय 'प्रार्थना योद्धा' उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य विश्वासियों को तब भी सुनते और उत्तर देते है जब वे अविश्वासियों के लिए प्रार्थना कर रहे होते हैं। विश्वासियों की प्रार्थना अविश्वासियों को चंगा करती है। हम एक लकवाग्रस्त व्यक्ति की कहानी जानते हैं जिसे चंगाई के लिए यीशु के पास लाया गया था। यह आदमी एक पापी था, परन्तु

यीशु ने उन चार व्यक्तियों के विश्वास को पहचान लिया जिन्होंने उसे उठाया था, और उसने लकवे के रोगी को तुरन्त चंगा किया। मत्ती 9:2 ''और देखो, कई लोग लकवा के एक रोगी को खाट पर रखकर उसके पास लाए। यीशु ने उनका विश्वास देखकर, उस लकवे के रोगी से कहा, "हे पुत्र, ढाढ़स बाँध; तेरे पाप क्षमा हुए।'' यदि हम महान विश्वास का जीवन जीते हैं, तो हमारे विश्वास के द्वारा बहुत से लोग बच जाएंगे, जैसे यीशु ने लकवाग्रस्त को चंगा किया जब उन्होंने चार व्यक्तियों के विश्वास को देखा जो उसे चंगा करने के लिए लाए थे। यह आदमी कौन था, उसे क्यों लकवा मार गया था, और इतने सालों तक वह क्यों पीड़ित रहा? यीशु ने उसकी पूर्व पीठिका की परवाह नहीं की, क्योंकि उन्होंने उन चार आदमियों के विश्वास को देखा जिन्होंने लकवे के रोगी को अपने सामने लाकर खड़ा कर दिया था, और इस कृत्य के कारण, यीशु ने उनके विश्वास का सम्मान किया। वहाँ इकट्ठे हुए फरीसियों ने यीशु की आलोचना करना शुरू कर दिया क्योंकि वे लकवाग्रस्त व्यक्ति की पूर्व पीठिका को जानते थे। लेकिन इसने यीशु को परेशान नहीं किया, और यह केवल चार आदमियों के विश्वास के कारण था कि यीशु ने लकवाग्रस्त को चंगा किया।

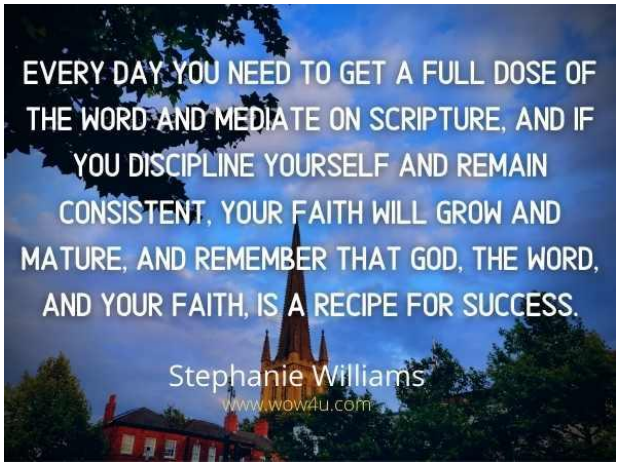

हमारा चर्च एक छोटा चर्च हो सकता है, लेकिन आज भी यीशु हर एक के विश्वास को देख रहे है, और उसी के अनुसार, वह हमें आशीर्वाद देंगे। हमारी जैसी छोटी कलीसिया के द्वारा परमेश्वर अद्भुत कार्य और चमत्कार कर सकते है। जिस प्रकार यीशु ने लकवे के रोगी को जीवन दिया, उसी प्रकार वह हमारे द्वारा और उस पर हमारे विश्वास के द्वारा भी अद्भुत कार्य कर सकते है। यहोशू की पुस्तक में, हम पढ़ते हैं कि कैसे यहोशू ने अपने लोगों को उसी दिन स्वयं को पवित्र करने के लिए कहा, क्योंकि वे अगले दिन एक चमत्कार देखेंगे। यदि हम आज पवित्र हो जाते हैं, तो हमारा प्रभु परमेश्वर कल हमारे द्वारा बड़े चमत्कार कर सकते है। प्रभु के मंदिर में, हम सत्य, वचन, परमेश्वर का प्रेम, सुख और आनंद प्राप्त करते हैं। जो परमेश्वर के पवित्र मंदिर में विश्वास के साथ आएंगे वे कभी भी खाली हाथ नहीं जाएंगे, और कोई भीख नहीं मांगेगा।

प्रेरितों के काम 3 में, एक लंगड़े व्यक्ति के माता–पिता ने उसे मंदिर के द्वार पर भीख माँगने के लिए छोड़ दिया, क्योंकि उसकी भीख माँगने से पूरा परिवार बच गया। जो लोग मन्दिर में आए, वे धनी थे, और उन्होंने अपना सोना–चाँदी दान के रूप में दे दिया। वे गरीबों से प्यार करते थे और गरीबों को अच्छा दान देते थे। प्रभु के मंदिर में जाना एक महत्वपूर्ण कार्य है, और प्रभु की आत्मा से भरे हुए लोग भी मंदिर जाते हैं। जब पतरस और यूहन्ना यहाँ प्रार्थना करने गए, तो उस लंगड़े ने उन से भीख माँगी। उन्होंने उस से कहा, सोना चान्दी तो हमारे पास नहीं, परन्तु हम नासरत के यीशु मसीह के नाम से आते हैं। उन्होंने यीशु के नाम से लंगड़े को चंगा किया, और उसे चलाया। लंगड़ा आदमी उनके साथ चर्च में चला गया, वह चल रहा था, छलांग लगा रहा था, और प्रभु की स्तुति कर रहा था। हमें प्रभु के मंदिर का सम्मान करने की जरूरत है, क्योंकि प्रभु के मंदिर में ही अच्छी और बड़ी चीजें होती हैं। इसलिए, हमें अपने जीवन को आज ही पवित्र करना चाहिए, ताकि हम कल अपना आशीष प्राप्त कर सकें।

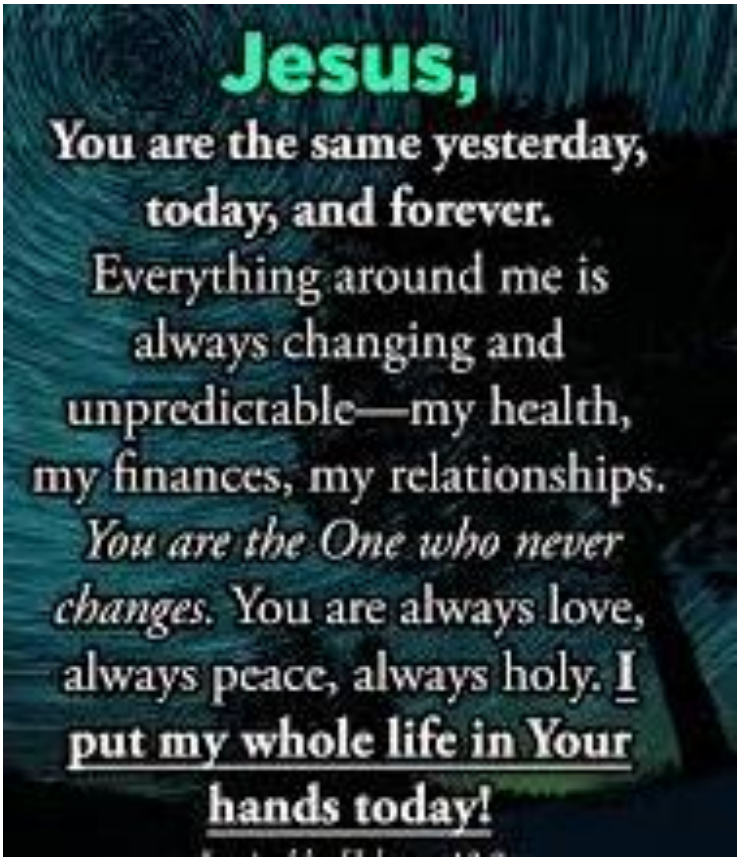

हमारा परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, वह हम पर हर समय दया और अनुग्रह दिखाता है। यीशु ने यहूदा को अपने मित्र के रूप में संबोधित किया, भले ही उसने उसे चांदी के तीस सिक्कों के लिए धोखा दिया था। इफिसुस मण्डली प्रेम की एक मण्डली थी, और इसलिए वे भेड़िये जो भेड़ के कपड़ों में आते थे, तुरन्त रंगे हाथों पकड़ लिए जाते थे।

हमारा परमेश्वर न सोते है और न ही ऊँघते है, उनकी निगाहें इस चर्च में लगातार हम पर टिकी हैं। यह एक मानव निर्मित चर्च नहीं है; यह स्वयं परमेश्वर द्वारा चुना गया चर्च है। जब हम इस चुने हुए चर्च को 'रोज ऑफ शेरोन' चर्च बनाना चाहते थे, तो हम एक बड़े चर्च की तलाश में इधर–उधर भाग रहे थे। हम जानते थे कि अगर हम इस चर्च को बरकरार रखते हैं, तो हमें बुरी और लड़खड़ाती जुबान सुननी पड़ेगी। इसी डर से हम बाहर तलाश कर रहे थे। फिर भी, क्योंकि यह चुना हुआ स्थान है, पवित्र शास्त्र में यह कहा गया है, 'क्योंकि जहां कहीं शरीर है, वहां उकाब इकट्ठे होंगे।' इस स्थान में परमेश्वर का प्रेम है, और यह वह प्रेम है जिसने हमारे ऊपर जीत हासिल की है। प्रभु कहते हैं, 'स्वर्ग और पृथ्वी टल जाएंगे, लेकिन मेरा वचन कभी जमीन पर नहीं

गिरेगा।' आज भी, परमेश्वर पास्टर को बदल सकते है, लेकिन वह इस स्थान पर हमेशा के लिए राज्य करते रहेंगे।

हमें उनके मंदिर में रहने के योग्य होना चाहिए। इस पवित्र मंदिर से बहुत से लोगों को निकाल दिया गया है, फिर भी यह जगह बनी हुई है, और यह और भी बढ़ती जा रही है। जो लोग चर्च छोड़ चुके हैं, वे भी सच्चाई जानते हैं, क्योंकि यहाँ हर किसी ने सच्चाई का स्वाद चखा है। पवित्रशास्त्र कहता है कि यीशु के दूसरे आगमन में, यीशु को सूली पर चढ़ाने वाले भी सत्य देखेंगे और वे पुकारेंगे, 'हमें छिपाओ, हमें छिपाओ।' इसी तरह, जिन्होंने हमारे चर्च को तिरस्कार और विवाद में छोड़ दिया है, वे भी यही कहेंगे। जो वचन हमें यहां मिलता है, वह लोगों को खुश करने या यहां तक कि वे जैसे हैं वैसे रहने के लिए नहीं दिया गया है। इसके बजाय, यह सुधारता है, और इस सुधार के माध्यम से, यह हमारे जीवन में आशीर्वाद लाता है, जब हम धर्मी बन जाते हैं, और हमारे प्रभु के लिए एक ज्वलंत आग बन जाते हैं। इसलिए हमें वचन के माध्यम से प्राप्त होने वाले प्रत्येक सुधार और विश्वास को स्वीकार करना चाहिए।

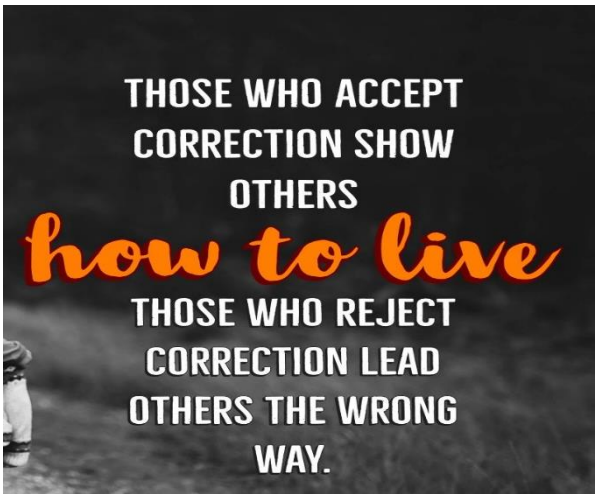

यहाँ तक कि जब वह पृथ्वी पर चल रहे थे, यीशु जीवित वचन थे। उन्होंने अन्यजातियों को प्रचार किया और उन्हें वचन सिखाया। उन्हीं लोगों ने, जिन्होंने वचन को सुना, बाद में प्रभु को सूली पर चढ़ा दिया। प्रभु यीशु ने पहले ही हमें यह कहकर चिताया था, 'ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम को मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होगा, परन्तु प्रसन्न रहो, मैं ने संसार को जीत लिया है।" यीशु ने यह नहीं कहा कि हमें कोई क्लेश नहीं होगा। उन्होंने कहा कि दुनिया के लोगों ने जो उनके साथ किया, वही हमारे साथ भी करेंगे। फिर यीशु ने कहा कि हमें विश्वास करना चाहिए, क्योंकि उन्होंने इस संसार को जीत लिया है। वही हमारी आशा और विश्वास है, और हमें उस पर विश्वास करना चाहिए। नहीं तो हम मुंह और जीभ से पाप करते रहेंगे, और हमारे प्राण नाश होंगे। हमेशा परमेश्वर के भय और प्रेम में जियो।

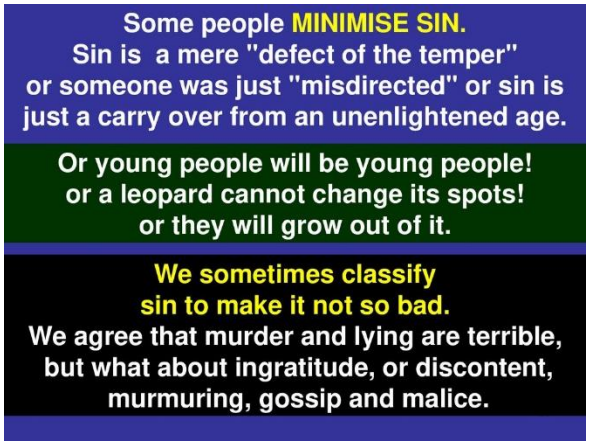

गिनती 11:18 ''और लोगों से कह, 'कल के लिये अपने को पवित्र करो, तब तुम्हें मांस खाने को मिलेगा; क्योंकि तुम यहोवा के सुनते हुए यह कह कहकर रोए हो, कि हमें मांस खाने को कौन देगा? हम मिस्र ही में भले थे। इसलिये यहोवा तुम को मांस खाने को देगा, और तुम खाना।'' क्या परमेश्वर ने यह मांस भटकते हुए इस्राएलियों को प्रेम

से दिया था? नहीं, उन्होंने यह मांस क्रोध में दिया, क्योंकि इस्राएलियों ने जंगल में कुड़कुड़ाया कि वे मांस खाना चाहते हैं, जैसा कि उन्होंने मिस्र में किया था। लोगों ने कुड़कुड़ाया कि उनके लिए मिस्र लौट जाना और वहां खीरे खाने से अच्छा है। लोगों के रोने और बड़बड़ाने से परमेश्वर क्रोधित हुए, और इसलिए, इस मांस को खाते समय, परमेश्वर का क्रोध उन पर आया और बहुतों के मुंह में मांस के साथ मृत्यु हो गई। हमें अपने मुंह और जीभ से प्रभु को क्रोध नहीं करना चाहिए। प्रभु जानते है कि हमारे लिए क्या अच्छा है। जब हम अपना जीवन उनके हाथों में देते हैं, तो वह हमारे लिए सर्वोत्तम प्रदान करेंगे। प्रभु ने लोगों को शुद्ध मन्ना यानि देवदूत का भोजन प्रदान किया, इसके बाद उनके पसीने से भी बदबू नहीं आई। ज़रा सोचिए, अगर आज हमें वही मन्ना मिल जाए तो हमें कितनी खुशी होगी! हमें इसके लिए न मेहनत करनी पड़ेगी, न इसके लिए कठिन परिश्रम करनी पड़ेगी और न ही इसके लिए संघर्ष करना पड़ेगा। हमें पूरे दिन केवल प्रभु की आराधना और स्तुति करनी होगी।

1 पतरस 3:11 ''वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूँढ़े, और उसके यत्न में रहे।'' जब तक परमेश्वर जक्कई से नहीं मिले, तब तक जक्कई ने अपने जीवन में अच्छा नहीं किया। वह एक धनी व्यक्ति था, पेशे से कर संग्रहकर्ता था। लेकिन जिस क्षण वह यीशु से मिला, वह और बेहतर होने के लिए बदल गया। उसने अपने सभी बुरे और पापपूर्ण कामों को पीछे छोड़ दिया और यीशु के पीछे हो लिया। प्रभु आज भी हमसे यही इच्छा करते है। प्रभु हमें तैरना सिखाने के लिए आए हैं ताकि हम जीवित रह सकें और अच्छा जीवन जी सकें, हमें डूबने के लिए नहीं।

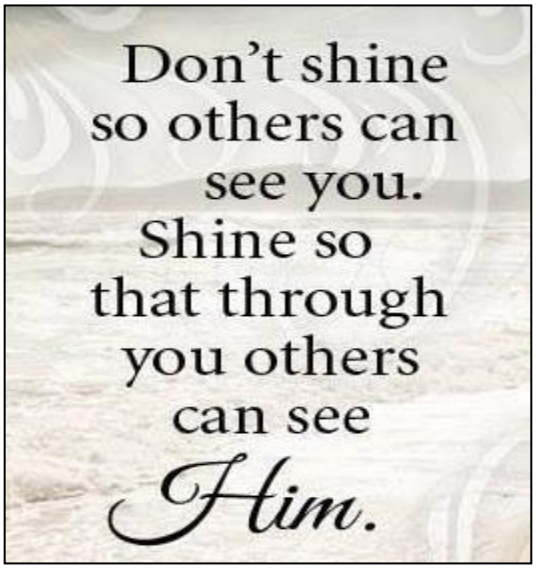

याकूब 3:13–18 ''तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। पर यदि तुम अपने–अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना। यह ज्ञान वह नहीं जो ऊपर से उतरता है, वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। क्योंकि जहाँ डाह और विरोध होता है, वहाँ बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है। पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह

पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है। मिलाप कराने वाले धार्मिकता का फल मेलमिलाप के साथ बोते हैं।''

जब प्रभु हमारे जीवन में आते हैं, तो सभी छोटे पाप हमारे जीवन से साफ हो जाते हैं और जड़ से खत्म हो जाते हैं। उसके बाद, प्रभु हमारा उपयोग कर सकते हैं और हमारे जीवन में हमारे द्वारा शक्तिशाली कार्य कर सकते हैं। हमें परमेश्वर के अनुग्रह में बढ़ना चाहिए और किसी भी सांसारिक वस्तु को हमारे जीवन के रास्ते में नहीं आने देना चाहिए। गीत याद है 'थिस लिटिल लाइट ऑफ़ माइन, आईएम गोंना लेट आईटी शाइन। लेट आईटी शाइन लेट आईटी शाइन, आल थे टाइम?' हमें प्रभु के प्रकाश को अपने भीतर चमकने देना चाहिए और बाहरी दुनिया के लिए हमारे माध्यम से चमकना चाहिए। दुनिया को भी इस रोशनी को देखने दो। हमें इस प्रकाश को अपने जीवन में नहीं छिपाना चाहिए। हमें इस प्रकाश को दुनिया के सामने प्रदर्शित करना चाहिए, जैसा कि जक्कई ने किया था। इस वजह से, यीशु ने घोषणा की कि उस दिन से, जक्कई अब अब्राहम के परिवार का हिस्सा था। हमारे जीवन में परमेश्वर के कार्य होते हुए देखकर प्रभु हमें अपना पुत्र/पुत्री बनाते है। हमारी इच्छा होनी चाहिए कि परमेश्वर का प्रकाश हम में चमके; और हम से, इस दुनिया में।

दाऊद ने भजन संहिता 139:23–24 में प्रार्थना की ''हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!'' हमें भी हर रात प्रार्थना करनी चाहिए जैसे दाऊद ने प्रार्थना की, 'हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर।'

प्रभु की कृपा हमारे जीवन में हर दिन हमेशा नई रहेगी, और हम उनकी कृपा से प्रतिदिन दृढ़ होते हैं। इसके लिए हमें प्रतिदिन अपने पाप उनके हाथों में देना चाहिए। तभी हम अपने जीवन में स्वतंत्र और शांतिपूर्ण महसूस करेंगे।

प्रभु हम में से प्रत्येक को आशीष दें। वह एक अच्छा प्रभु है। वह हम में से प्रत्येक पर अपनी भलाई की वर्षा करें!

पास्टर सरोज म।